संवाद पत्र
पूर्वोत्तर सीमा रेल
निर्माण संगठन

अंक 25 | वर्ष : सप्तम | त्रैमासिक | जनवरी, 2013

श्री आर. एस. विर्दी, महाप्रबंधक,पू. सी. रेल ने पू. सी. रेल/निर्माण का अतिरिक्त कार्यभार ग्रहण किया

श्री रंजित सिंह विर्दी, महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर सीमा रेल ने दिनांक 5.11.2012 को महाप्रबंधक/निर्माण का अतिरिक्त कार्यभार ग्रहण किया। श्री सिंह ने जमालपुर के इंडियन *रेलवेज मेकनिकल इलेक्ट्रीकल इंजीनियरिंग संस्था* से स्नातकोत्तर के पश्चात 1977 में भारतीय रेल में योगदान किया। वर्ष 1998 में भारतीय कॉन्टेनर निगम (CONCOR) के कॉरपोरेट कार्यालय में ग्रुप महाप्रबंधक के रूप में उनकी नियुक्ति हुई। वर्ष 2002 में वे कार्यवाही निदेशक (मेकानिकल इंजीनियरी), रेलवे बोर्ड के पद पर पदस्थापित हुए। श्री सिंह भारतीय रेल में जर्मन डिजाइन एलएचबी सवारी डिब्बे की व्यवस्था का मुख्य परिचायक हैं। जुलाई 2010 में पूर्वोत्तर सीमा रेल के मुख्य यांत्रिक इंजीनियर के पद पर पदस्थापन से पहले उन्होंने कॉफमो में मुख्य यांत्रिक इंजीनियर तथा आरडीएसओ में वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक के रूप में भी कार्य किया। इसके साथ-साथ श्री सिंह खेल तथा इससे संबंधित गतिविधियों में भी काफी रूचि लेते हैं।

पूर्वोत्तर सीमा रेल/निर्माण के नए महाप्रबंधक

श्री राजेश कुमार सिंह ने 16 जनवरी, 2013 को महाप्रबंधक, पूवोत्तर सीमा रेल/निर्माण का पदभार ग्रहण किया। इससे पहले वे पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर में मुख्य बिजली इंजीनियर के रूप में सेवारत थे। श्री सिंह भारतीय रेल सेवा के इलेक्ट्रिकल इंजीनियर (आईआरएसईई) 1976 बैच के अधिकारी हैं। श्री सिंह आईआईटी, रूड़की से स्नातक हैं तथा भारतीय रेल में उनकी पहली नियुक्ति वर्ष 1977 में टीआरएस/कुर्ला कार शेड, मध्य रेल में एईई के रूप में हुई। अपनी सेवा के दौरान उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों यथा अपर मंडल रेल प्रबंधक, पूर्वोत्तर रेल, वाराणसी, मंडल रेल प्रबंधक, चक्रधरपुर, दक्षिण पूर्व रेलवे, कार्यकारी निदेशक, रेलवे बोर्ड, मुख्य बिजली इंजीनियर, पश्चिम रेलवे, जबलपुर तथा मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, मधेपुरा वर्कशॉप, पूर्व मध्य रेल में कार्यरत थे। वे भारतीय दूतावास, जर्मनी में उप रेलवे सलाहकार के पद पर भी कार्य कर चुके हैं। संवाद पत्र की ओर से उनका हार्दिक स्वागत है।

सराईघाट पुल के पचास साल पूरे हुए

पूर्वोत्तर राज्यों को देश के अन्य राज्यों से जोड़ने वाला ऐतिहासिक सराईघाट पुल का निर्माण कार्य जनवरी, 1958 को शुरू किया गया था। 7 जून 1963 को भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने औपचारिक तौर पर यात्री यातायात के लिए इसका उद्घाटन किया। 6 नवंबर, 2012 को इस पुल के स्वर्ण जयंती के अवसर पर रेल द्वारा एक भव्य समारोह आयोजित किया गया, जिसमें असम के महामहिम राज्यपाल श्री जे.बी. पटनायक, माननीय मुख्य मंत्री श्री तरूण गोगोई, पूर्वोत्तर सीमा रेल के माननीय महाप्रबंधक श्री आर. एस. विर्दी तथा अन्य गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

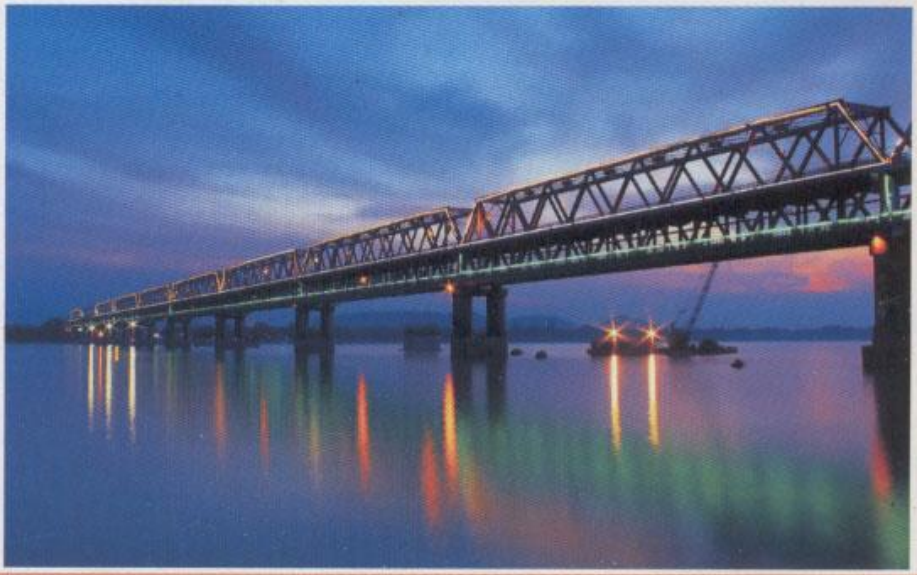

संरक्षक	मुख्य संपादक	संपादक	सहयोग
श्री राजेश कुमार सिंह	श्री हरपाल सिंह	श्री पी.के. सिंह	श्रीमती रंजु झा
महाप्रबंधक/निर्माण	मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि	उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि	वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/नि

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण/2 का कार्यभार ग्रहण

श्री सुबोध कुमार कुलश्रेष्ठ ने दिनांक 05.11.2012 को पूर्वोत्तर सीमा रेल/निर्माण संगठन के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी-2 का पदभार ग्रहण किया। वे 1979 बैच के आई.आर.एस.ई. अधिकारी हैं। श्री कुलश्रेष्ठ को ट्रैक निर्माण और रख-रखाव का विपुल अनुभव है। वर्ष 1979 में रूड़की विश्वविद्यालय (अब आईआईटी रूड़की) से उन्होंने सिविल इंजीनियरी की डिग्री प्राप्त की। निर्माण संगठन में मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के पद पर पदस्थापित होने से पूर्व वे कई महत्वपूर्ण पदों जैसे कि मुख्य सुरक्षा अधिकारी, पश्चिम रेलवे, मंडल रेल प्रबंधक, चेन्नई, दक्षिण रेलवे, मुख्य ट्रैक इंजीनियर, पश्चिम रेलवे पर आसिन थे तथा पूर्वोत्तर सीमा रेल में मुख्य इंजीनियर/निर्माण एवं मुख्य ट्रेक इंजीनियर के रूप में भी वे कार्य कर चुके हैं।

वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी/निर्माण-2 का कार्यभार ग्रहण

श्री के. टी. बैचो ने दिनांक 7.11.2012 को वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी/निर्माण-2 का कार्यभार ग्रहण किया। इससे पहले श्री बैचो पूर्वोत्तर सीमा रेल, मुख्यालय में उप वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी/नकदी एवं भुगतान के पद पर कार्यरत थे।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

दिनांक 29.10.2012 से 3.11.2012 तक "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" आयोजित किया गया। इस अवसर पर संगठन के परिसर में श्री ए.एस. गरूड़, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सतर्कता जागरूकता की शपथ दिलाई।

भारत रत्न, बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर का 56 वाँ महापरिनिर्वाण दिवस समारोह

भारत रत्न, बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के 56 वें महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर 06 दिसम्बर, 2012 को पूर्वोत्तर सीमा रेल, निर्माण संगठन मुख्यालय के मुख्य भवन के प्रांगण में श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर निर्माण संगठन के अधिकारियों और कर्मचारियों ने बाबा साहेब के चित्र पर पुष्प चढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पित की और देश के लिए उनके योगदान को याद किया।

रिजनल परमानेंट को-आर्डिनेशन फ्रेमवर्क की बैठक

मुख्यालय, पूर्व कमान, कोलकाता में दिनांक 20.12.2012 को सामरिक लाइनों की प्रगति की समीक्षा के लिए रिजनल परमानेंट को-ऑर्डिनेशन फ्रेमवर्क (आर पी सी एफ) की सातवीं बैठक की गई। बैठक में सेना के सी.ओ., पूर्व कमान तथा रेलवे के महाप्रबंधक/निर्माण, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 एवं मुख्य इंजीनियरों ने भाग लिया।

सदस्य इंजीनियरी, रेलवे बोर्ड द्वारा रेलवे बोर्ड में समीक्षा बैठक का आयोजन

सदस्य इंजीनियरी, रेलवे बोर्ड द्वारा दिनांक 18.10.2012 को रेलवे बोर्ड में एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई, जिसमें मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 एवं 2 उपस्थित थे। बैठक में पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) की 2011-12 के लिए शेष परियोजनाओं तथा 2012-13 में लक्ष्य निर्धारित परियोजनाओं के निष्पादन की समीक्षा की गई। इन परियोजनाओं की सम्पूरण हेतु आवश्यक निधि पर विस्तार पूर्वक चर्चा हुई। उन्होंने दिनांक 02.11.12 से 06.11.12 तक पूर्वोत्तर सीमा रेल के विभिन्न कार्यस्थलों का दौरा किया और गैंगटॉक, शिलांग तथा मालीगांव में बैठक करते हुए निर्माण परियोजनाओं के निष्पादन का समीक्षा किया। समीक्षा बैठक में सदस्य इंजीनियरी द्वारा दिए गए विभिन्न निदेशों तथा अनुदेशों के अनुपालन हेतु कार्रवाई प्रारंभ कर दी गई है। दिनांक 29.10.2012 को इस कार्यालय के पत्र सं. डब्ल्यू/25/नि/2012-13 के तहत लक्ष्य निर्धारित निर्माण कार्यों को पूरा करने के लिए पुन: निर्धारित निधि का प्रस्ताव रेलवे बोर्ड को अग्रेषित किया गया है।

स्थानांतरण /पदस्थापन

श्रीमती अपर्णा त्रिपाठी ने दिनांक 21.11.2012 को उप वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी/निर्माण-3 का पदभार ग्रहण किया। इससे पहले श्रीमती त्रिपाठी पू. सी. रेल, मुख्यालय में उप वि.स./ एस एवं डब्ल्यू के पद पर कार्यरत थीं।

श्री एस.पी. देशमुख, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/जिरिबाम-1 का दिनांक 22.11.12 को उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/ब्रीज़ लाइन/मालीगांव में स्थानांतरण हुआ।

श्री एस.कनौजिया, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण-2/एनएलपी का दिनांक 22.11.12 को उप मुख्य इंजीनियर/टीएमसी/ मालीगांव में स्थानांतरण हुआ।

श्री एस.पी. सिंह, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/एनजेपी का दिनांक 22.11.12 को वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/नि/कटिहार के पद पर पदस्थापित किया गया।

श्री अजय कुमार, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/इंफॉल-2 का दिनांक 22.11.12 को प्रतिनियुक्ति पर रेल विकास निगम लिमिटेड में जेजीएम/भुवनेश्वर के पद पर स्थानांतरण हुआ।

श्री पी.के. सिंह, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/अगरतला-2 का दिनांक 22.11.12 को वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/1/एपीडीजे के पद पर पदस्थापित किया गया।

श्री जे.पी. सिंह, उप मुख्य इंजी./पुल लाइन/मालीगांव का दिनांक 22.11.12 को उप मुख्य इंजी./निर्माण/एनजेपी के पद पर स्थानांतरण हुआ।

श्री के.नरह, उप मुख्य इंजीनियर/टीएमसी/मालीगांव का दिनांक 22.11.12 को उप मुख्य इंजी/निर्माण/जिरिबाम-1 के पद पर स्थानांतरण हुआ।

श्री अजय कुमार, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/नि/कटिहार दिनांक 22.11.12 को महाप्रबंधक/निर्माण के सचिव के पद पर पदस्थापित हुए।

श्री एस.एस. खंग्रीम्माइ, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/1/एपीडीजे दिनांक 22.11.12 को उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/अगरतला-2 के पद पर पदस्थापित हुए।

श्री रंजित दास, उप मुख्य इंजीनियर/नि/कटिहार का दिनांक 10.12.2012 को उप मुख्य इंजीनियर/नि/डीएमवी के पद पर स्थानांतरण हुआ।

श्रद्धांजलि

श्री धृतिमान पानीकर, कनिष्ठ लिपिक/निर्माण का दिनांक 16.12.2013 को एक सड़क दूर्घतना में देहांत हो गया। हँसमुख एवं मिलनसार व्यक्तित्व के कर्मचारी स्वर्गीय धृतिमान की मृत्यु पर संगठन के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों में शोक का लहर विद्यमान है। उनकी आत्मा की शांति के लिए निर्माण संगठन के कार्यालय परिसर में दिनांक 18.12.2012 को शोक सभा आयोजित की गई।

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

सितंबर, 2012 को समाप्त तिमाही के लिए वर्ष 2012 की चौथी बैठक का आयोजन महाप्रबंधक/निर्माण श्री आर.एस. विर्दी की अध्यक्षता में दिनांक 19.12.2012 को किया गया। बैठक में राजभाषा के प्रचार-प्रसार से संबंधित विभिन्न मदों पर विचार-विमर्श किया गया और वर्ष 2012-13 के वार्षिक कार्यक्रम पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई। बैठक का संचालन श्री हरपाल सिंह, मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि ने किया और श्रीमती रंजु झा, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने सचिव प्रतिवेदन पावर प्वाइंट में प्रस्तुत की।

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

हिंदी में प्रवीणता/कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों को हिंदी नोटिंग आदि लिखने में हो रही झिझक को दूर करने के लिए निर्माण संगठन के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 05.11.2012 से 09.11.2012 तक एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। संगठन के विभिन्न विभाग के लिपिक वर्गीय कर्मचारी काफी संख्या में इस कार्यशाला में सम्मिलित हुए।

राष्ट्रीय परियोजनाएं

जिरिबाम से तुपुल तक नई बीजी लाइन (84 कि.मी.)

1282.66 हेक्टेयर भूमि में से 1089.022 हेक्टेयर भू-अधिग्रहण, 514.45 लाख क्यूबिक मीटर में से 314.885 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य, 84.0 कि.मी. में से 15.95 कि.मी. फॉर्मेशन, 107 में से 30 छोटे पुल, 6 में से 5 आर ओ बी/आर यू बी, 210000 में से 27000 क्यूबिक मीटर गिट्टी आपूर्ति और 39401.0 मीटर में से 3463.50 मीटर सुरंगीकरण का कार्य अब तक पूरा किया गया। 12.5 कि.मी. मुख्य लाइन एवं 1.20 कि.मी. लूप लाइन का ट्रैक लिंकिंग पूरा किया गया।

मानसून, वर्तमान सुरक्षा परिदृश्य और बहुधा बंद के कारण कार्य प्रगति बुरी तरह प्रभावित हुई है। राष्ट्रीय राजमार्ग-53 की बदतर स्थिति तथा कमजोर/क्षतिग्रस्त पुलों से भी निर्माण सामग्री और मशीनरी का कार्यस्थल तक आवागमन बाधित हो रहा है।

जिरिबाम-धोलाखाल (12.5 कि.मी.) सेक्शन पूरा किया गया और दिनांक 23-03-12 को इंजन चलाया गया।

बोगीबिल के निकट ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी एवं दक्षिणी तटों पर लिंक लाइनों सहित रेल-सह-सड़क पुल

पुल के उत्तरी तट तथा दक्षिणी तट रेल लिंक पर तटबंध, बड़े एवं छोटे पुलों, स्टेशन निर्माण कार्य पूरा किया जा चुका है।

दिनांक 08-12-2009 को बोगीबिल पुल परियोजना के साउथ बैंक सेक्शन पर मोरानहाट-चाउलखोवा (44 कि.मी.) रेल लिंक को चालू किया गया और दिनांक 29-01-2010 को सेक्शन ओपन लाइन को सुपुर्द किया गया।

उत्तरी और दक्षिणी मार्गदर्शी बांध का निर्माण अंतिम लेवल तक अर्थात आर एल 110.52 मीटर तक तथा संरक्षण कार्य अर्थात् साउसेज क्रेटस, ढाल पिचिंग एवं ग्राउंटिंग सहित अंतिम लेवल अर्थात आर एल 116 मी. तक संयुक्त पहुंच तटबंध कार्य पूरा हो गया है।

तेतेलिया से बरनीहाट तक नई बीजी लाइन (21.50 कि.मी.) (आजरा-बरनीहाट नई लाइन का वैकल्पिक संरेखण)

रेलवे बोर्ड के दिनांक 13-10-09 के पत्र संख्या 2001/डब्ल्यू-1/एन एफ/एन एल/सी ए/6-पार्ट के अनुसार आजरा-बरनीहाट नई लाइन के वैकल्पिक संरेखण के रूप में तेतेलिया-बरनीहाट का अध्ययन किया गया। असम और मेघालय की राज्य सरकारों एवं ओपन लाइन ने प्रस्तावित वैकल्पिक संरेखण को अनुमोदित कर दिया है। 19.2 कि.मी. सेक्शन असम में तथा 2.3 कि.मी. मेघालय में पड़ता है। तेतेलिया से बरनीहाट तक फाइनल लोकेशन सर्वे पूरा किया जा चुका है। रेलवे बोर्ड द्वारा दिनांक 05-08-2010 को कुल 384.04 करोड़ रूपए का विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत किया जा चुका है। असम में, पट्टा भूमि के लिए कुल 13 भू-अर्जन मामलों में से 12 भू-अर्जन मामले को सुपुर्द किया जा चुका है तथा अधिनिर्णय का 1 मामला प्रगति पर है।

दिमापुर से जुब्जा तक नई लाइन (88 कि.मी.)

दिमापुर से कोहिमा 123 कि.मी. तक संपूर्ण लंबाई के लिए एफ एल एस पूरा किया जा चुका है। भू-तकनीकी जांच प्रगति पर है (45.0 कि.मी. पूरा किया गया)। जैविक पार्क से होकर संरेखण गुजरने के कारण स्थानीय लोगों के सख्त विरोध की वजह से राज्य सरकार के अनुरोध पर कि.मी. 4.0 और कि.मी. 7.0 के बीच संरेखण प्रतिस्थापित किया गया। उपायुक्त/दिमापुर द्वारा दिमापुर-जुब्जा नई लाइन परियोजना के समस्या के समाधान के लिए दिनांक 14-12-2011 को एक बैठक आयोजित की गई।

अगरतला से सबरूम तक नई बीजी लाइन (110 कि.मी.)

अगरतला से सबरूम तक संपूर्ण लंबाई के लिए फाइनल लोकेशन सर्वे का कार्य तथा भूमि पर संरेखण की स्टेकिंग का कार्य पूरा किया गया। भू-तकनीकी जांच भी पूरी कर ली गई है। दिनांक 29-07-09 को रेलवे बोर्ड ने अगरतला से उदयपुर तक 44 कि.मी. के लिए 352.95 करोड़ रूपए का आंशिक विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत कर दिया है। उदयपुर से सबरूम तक शेष 66.0 कि.मी. सेक्शन के लिए कुल 777.67 करोड़ रूपए का पार्ट-III विस्तृत प्राक्कलन भी रेलवे बोर्ड द्वारा दिनांक 23-11-2010 को स्वीकृत किया जा चुका है।

450.54 हेक्टेयर भू-अधिग्रहण, 45.84 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य, 10.30 कि.मी. फॉर्मेशन, 7 बड़े पुलों की उप संरचना और 4 अधिसंरचना, 48 छोटे पुल, 15 आर ओ बी, 13 आर यू बी तथा 11 एल एच एस एवं 22000 क्यूबिक मीटर गिट्टी आपूर्ति कार्य पूरे किए गए। 9.80 कि.मी. ट्रैक लिंकिंग पूरा किया जा चुका है।

भैरव-सैरंग (51.38 कि.मी.) तक नई बड़ी लाइन

भैरव-सैरंग (51.38 कि.मी.) तक नई बड़ी लाइन हेतु भूमि पर संरेखण का स्टेकिंग सहित फाइनल लोकेशन सर्वे पूरा किया जा चुका है। 12.0 कि.मी. भू-तकनीकी जाँच, 9.00 कि.मी. प्रतिरोधात्मक सर्वेक्षण भी पूरा किया गया। रेलवे बोर्ड ने दिनांक 01.09.2011 को कुल 2384.34 करोड़ रूपए का विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत कर दिया है।

सेवक से (44.33 कि.मी.) रंगपो तक नई बड़ी लाइन

कुल 3380.58 करोड़ रूपए का विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृति के लिए दिनांक 30.12.2009 को रेलवे बोर्ड में प्रस्तुत किया गया। दिनांक 03.08.2012 को रेलवे बोर्ड के नवीनतम टिप्पणी का अनुपालन किया गया।

परियोजना निष्पादन के लिए मेसर्स इरकॉन को सौंपी गई है और इरकॉन के साथ दिनांक 07.05.10 को एम ओ यू हस्ताक्षर किया गया।

बरनीहाट से शिलांग तक नई बड़ी लाइन (108.4 कि.मी.)

बरनीहाट से लाइलाड (20 कि.मी.) तक फाइनल लोकेशन सर्वे पूरा किया जा चुका है। मेघालय के एक एन जी ओ, खासी स्टूडेंट यूनियन (के एस यू) द्वारा नवंबर, 2010 में कार्य रोकने के पूर्व अगले 35 कि.मी. के लिए स्थलाकृति सर्वेक्षण पूरा किया गया। निर्माण-पूर्व कार्रवाईयों के लिए पार्ट-। विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत है।

कुमारघाट-अगरतला नई लाइन (109 कि.मी.)

कुमारघाट से मानु (20 कि.मी.) दिनांक 27.12.2002 को चालू किया गया।

मानु-अगरतला (89 कि.मी.) कार्य पूरा किया गया। यह सेक्शन एम जी ट्रेन सर्विस के लिए दिनांक 05.10.08 को चालू किया गया।

लिंक फिंगर्स सहित रंगिया-मुर्कोंगसेलेक आमान परिवर्तन (511.88 कि.मी.)

इस कार्यालय का दिनांक 07.09.05 के पत्र सं.डब्ल्यू/98/कॉन/रंगिया-एमजेडएस/भाग-।। के अंतर्गत रंगिया-रंगापाड़ा के लिए कुल 327 करोड़ रूपया का पार्ट विस्तृत प्राक्कलन रेलवे बोर्ड द्वारा दिनांक 28.11.06 को पुलों तथा फार्मेशन के लिए कुल 75.27 करोड़ रूपए का सिविल इंजीनियरी प्राक्कलन स्वीकृत किया गया। रेलवे बोर्ड द्वारा 19.09.08 को शेष कार्य के लिए कुल 1480.96 करोड़ का पार्ट ।।। विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत किया गया।

वित्तीय निष्पादन

2011-12 का निष्पादन

- खर्च = 2272.50करोड़ रूपये

2012-13 का परिव्यय

- अतिरिक्त बजटीय सहायता = 0.00 करोड़ रूपये
- मांग-16 (अंतिम अनुदान) = 2347.90 करोड़ रूपये

कुल = 2260.08 करोड़ रूपये

2012-13 का खर्च

- दिसंबर, 12 के दौरान खर्च (लगभग) = 184.16 करोड़ रूपये
  + 0.00 करोड़ रूपये (निक्षेप कार्य)

कुल = 184.16 करोड़ रूपये

- दिसंबर,12 तक संचयी खर्च (लगभग) = 2043.67 करोड़ रूपये
  + 0.00 करोड़ रूपये (निक्षेप कार्य)

कुल = 2043.67 करोड़ रूपये

परिव्यय का खर्च (%) = 87.04 %

वर्कशॉप

कार्य	प्रगति	लक्ष्य
♦ किशनगंज- ट्रेन परीक्षण सुविधा का विकास	85%	निधि की अनुपलब्धता तथा साइट क्लियरेंस के कारण कार्य बंद पड़ा है।
♦ न्यू बंगाईगांव-वर्कशाप आरसीसी बाउंडरी वॉल	70%	3500 आरएम में से 2400 आरएम तक तथा 2.40 किमी पथ-वे में से 2.4 मीटर पथ-वे कार्य पूरा हुआ। बाउंडरी वॉल का कार्य पूरा किया गया।
♦ सिलिगुड़ी जंक्शन डीज़ल शेड-100 लोकोमेटिव को रखने के लिए डीज़ल लोकोशेड का विस्तार	95%	31.08.2011 कार्य प्रगति पर है।
♦ सिलिगुड़ी जंक्शन-डीज़ल बहुउद्देशीय यूनिट कारशेड के साथ रेल कार रख-रखाव की सुविधा	100%	31.3.11 कार्य पूरा हुआ और चालू किया गया।

सिगनल एवं दूरसंचार निर्माण कार्य

कार्य	प्रगति	लक्ष्य
♦ पानीटोला-डिब्रूगढ़ टाउन: स्टन्डर्ड III पैनल इन्टरलॉकिंग तथा एम.ए.सी.एल. द्वारा सिगनलों का अपग्रेडशन (राजधानी मार्ग, 5 स्टेशन)	पानीटोला से लाहोअल तक 4 स्टेशनों पर कार्य शुरू किया। डिब्रूगढ़ टाउन में पी.आई कार्य दिनांक 16.12.2010 को चालू किया गया।	कार्य पूरा हुआ।
♦ न्यूजलपाईगुड़ी - बारसोई - मालदा टाउन व बारसोई - कटिहार मोबाइल ट्रेन रेडियो कम्युनिकेशन	कटिहार मंडल तथा अलीपुरद्वार मंडल के 'वे साइड सिस्टम' क्रमश: दिनांक 26.05.10 तथा 9.6.10 को ओपन लाइन को सौंप दिए गए।	कार्य पूरा हुआ।
♦ न्यू जलपाईगुड़ी-बंगाईगांव-गुवाहाटी : मोबाइल ट्रेन रेडियो कम्युनिकेशन	पू.सी.रेल, मालीगांव का मोबाइल स्विचिंग केंद्र तथा रंगिया मंडल का 'वे साइड सिस्टम' देख-रेख हेतु क्रमश: 25.03.10 तथा 30.03.10 को ओपन लाइन को सौंप दिया गया।	कार्य पूरा करके तिनसुकिया मंडल को सौंपा गया।

वर्ष 2012-13 के लक्षित कार्य

- दुधनोई मेंदीपथार नई लाइन
- न्यू मैनागुड़ी-जोगीघोपा
- न्यू चेंग्राबंधा-न्यू कूचबिहार
- रंगिया-मुकोर्सेलेक आमान परिवर्तन
- रंगिया-रंगापाड़ा नॉर्थ
- रंगापाड़ा नॉर्थ-डेकारगांव
- रंगापाड़ा नॉर्थ-नॉर्थ लखीमपुर

पूरे किए गए सर्वेक्षण

क्रम सं	सर्वेक्षण का नाम	स्वीकृति वर्ष	राज्य	प्रगति
1.	शिलांग से चंद्रनाथपुर	2011-12	असम तथा मेघालया	100%
2.	लंका-लिंकेट-उमरांगसु-समेर-सखांय	2011-12	असम तथा मेघालया	100%
3.	तिनसुकिया टाउन होके डिब्रूगढ़-दंगरी	2011-12	असम	100%
4.	न्यू बंगाईगांव से कामाख्या वाया ग्वालपाड़ा	2011-12	असम	100%
5.	सिलघाट से तेजपुर	2011-12	असम	100%

सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों का विदाई समारोह

निर्माण संगठन में अक्तूबर, नवंबर तथा दिसंबर, 2012 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विदाई समारोह आयोजित किए गए। इन अधिकारियों/कर्मचारियों को उनकी सेवानिवृत्ति के भुगतान संबंधी चैक तथा स्वर्ण जड़ित चांदी के पदक प्रदान किए गए। निर्माण संगठन, सेवानिवृत्त हुए इन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को उनके सुखद सेवानिवृत्त जीवन व पारिवारिक समृद्धि की कामना करता है।

क्रमांक	नाम	पदनाम	कार्यालय/विभाग	सेवानिवृत्ति माह
1.	श्री ए.एफ. शेवरे	मु.प्र.अ./नि-2	महाप्रबंधक/निर्माण	अक्तूबर, 2012
2.	श्री रजत कांती दास	कनिष्ठ लिपिक/नि	उप मु.इंजी/नि/1/सिलचर	अक्तूबर, 2012
3.	श्री दीपक घोषाल	रिकार्ड सॉर्टर/नि	उप मुंजी/नि/एनजेपी	अक्तूबर, 2012
4.	श्री चिंमय दे	व.अनु.इंजी./नि/डब्ल्यू	महाप्रबंधक/नि	नवंबर, 2012
5.	श्री संजय कांजीलाल	वरिष्ठ लिपिक/नि	उपमुंजी/नि/रंगिया	नवंबर, 2012
6.	मो: आब्दुल खालेक	सीनियर ट्रैकमैन /नि	उपमुंजी/नि/एनजेपी	नवंबर, 2012
7.	श्री के.के. लकड़ा	कांजी/नि/मालदा	महाप्रबंधक/निर्माण	दिसंबर, 2012
8.	श्री सी.के. सैकिया	कनिष्ठ लिपिक/नि	उपमुंजी/नि/सिलापथार	दिसंबर, 2012
9.	श्री महेंद्र पासवान	फिटर/ग्रेड/नि	उपमुंजी/नि/मालीगांव	दिसंबर, 2012
10.	श्री सोनिका मुंडा	व.एस.डब्ल्यू.एम./नि	उपमुंजी/नि/डीबीआरटी	दिसंबर, 2012
11.	श्री रमणी डेका	टी/मैन/कॉन	उपमुंजी/नि/मालीगांव	दिसंबर, 2012
12.	श्री गोबर्धन शर्मा	पी.डब्ल्यू.एम./नि	उपमुंनि/नि/मालीगांव	दिसंबर, 2012
13.	श्री देवब्रत दास	काधी/कार्मिक/नि	उप मुकाधि/नि/मालीगांव	दिसंबर, 2012
14.	श्री तरूण चंद्र बोरा	निजी सचिव/II/नि	उप मुकाधि/नि/मालीगांव	दिसंबर, 2012

अरूणाचल का पर्यटन स्थल-तवांग

भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र, जहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य, हरे-भरे पहाड़, फीरोजी नीले रंग के पानी से भरी नदियाँ, वृहत समतल भूमि, घने जंगलों, विभिन्न जाति-प्रजातियों के पेड़-पौधे,जीव-जन्तुओं तथा यहाँ पर वास करने वाले सीधे-सादे व्यक्तित्व एवं हंसी-खुशी जीवन व्यतीत करने वाले बहुरंगी संस्कृति के धनी लोगों के कारण ही पर्यटक इस जगह की ओर आकर्षित होते हैं।

भूटान, चीन और म्यांमार की सीमा से सटे और हिमालय की गोद में बसे अरूणाचल प्रदेश में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। अस्सी हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैले अरूणाचल प्रदेश का सत्तर हजार वर्ग किलोमीटर इलाका हिमालय की गोद में अवस्थित है। पूरे अरूणाचल प्रदेश में हिमालय की पहाड़ियों की श्रृंखलाएं हैं। चीन की सीमा से सटा तवांग जिला का गुमलापास तो पूरे वर्ष बर्फ से आच्छादित रहता है। पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र तवांग, भारत के पूर्वोत्तर राज्य अरूणाचल प्रदेश का सबसे पूर्वी जिला है। यहीं से होकर चीन की फौज ने भारत में घुसपैठ की थी। यहां ज्यादातर लोग मुनपा या मोनपा हैं। यह एक बौद्ध समुदाय है। तवांग में 1962 के वार मेमोरियल में रखी तस्वीरों से पता चलता है कि चीन के साथ युद्ध के दौरान मुनपा समुदाय के लोगों का पूरा समर्थन भारतीय सेना को मिला था।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के प्रवेशद्वार माने जाने वाले गुवाहाटी से तवांग का सफर काफी मजेदार होता है। आप ट्रेवेल एजेंट के माध्यम से गाड़ी एवं होटल आदि पहले से बुक करा सकते हैं। गुवाहाटी से सुबह चलकर छह-सात घंटे में अरूणाचल के प्रवेश-द्वार भालूकपोंग पहुँचा जा सकता है। भालूकपोंग से ही ऊँची पहाड़ियों, गहरी खाइयों, झरनों, प्रपातों, इठलाती कल-कल बहती तेज पहाड़ी नदियां और घने जंगल शुरू हो जाते हैं। भालूकपोंग में ही पहाड़ों से उतरती कामेंग नदी में साहसिक जल क्रीड़ा (रिवर राफिटंग) और एंगलिंग का भी लुफ्त उठाया जा सकता है। भालूकपोंग से 5 कि.मी. की दूरी पर टीपी में एक आर्किडियम है जो राज्य का बोटानिकल पैराडाइज है। यहां लगभग 300 प्रजातियों के पेड़-पौधे हैं। टीपी से बोमडिला जाते समय 24 कि.मी की दूरी पर सेसा स्थित है जहां एक आर्किड सेंक्च्युअरी है। यहाँ 2600 से अधिक विभिन्न प्रजातियों के दुलर्भ आर्किड का संग्रह है। इससे आगे बोमडिला है, जो पर्यटकों का पसंदीदा स्थल है। पश्चिम कामेंग जिला के मुख्य शहर बोमडिला 8,500 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ पर मोनपा, सेरदुकपेन, अका(हरूसों), मिजी तथा बोगन समुदाय के लोग रहते हैं। यहाँ ठहरने के लिए बेहतर इंतजाम हैं। बाजार और होटल के अलावा टूरिस्ट लॉज और सर्किट हाउस भी है। पर्यटक चाहें तो यहाँ ठहर सकते हैं या बोमडिला से 45 किलोमीटर की दूरी पर दिरांग है, जो मठों तथा गरम झरनों के लिए विख्यात है, वहां भी ठहरने के लिए अच्छी सुविधाएं उपलब्ध हैं। ऊँचाई के साथ-साथ रास्ते जटिल, टेढ़े-मेढ़े और घुमाऊ होते जाते हैं और ठंड़ भी अपेक्षाकृत बढ़ने लगती है। दूसरे दिन सुबह वहां से तवांग की ओर यात्रा फिर शुरू की जा सकती है। दोपहर तक सेलापास पहुँच सकते है। सेलापास सबसे ऊँची पहाड़ी है तथा 14,000 फीट की ऊँचाई पर है। यहीं से तवांग जिला शुरू होता है। सेसा से करीब एक घंटे की दूरी पर स्थित है जसवंत गढ़। इस स्थान पर राइफलमैन जसवंत सिंह रावत 4039009 के नाम का एक बहुत बड़ा वार मेमोरियल है। ये चौथे बटालियन गढ़वाल रायफल इंफेंट्री रेजीमेंट के अधिकारी थे और अपने वीरता का प्रदर्शन करते हुए अकेले 72 घंटे तक चीनी सिपाहियों से अपनी पोस्ट पर लड़ते हुए इस खूनी जंग में अपनी जान गवा दी थी। इस वीर सिपाही को मरणोपरांत महावीर चक्र से नवाजा गया। स्थानीय लोगों में ऐसा विश्वास है कि उनकी आत्मा अब भी उस जगह पर घूमती-फिरती है। इस जंग के समय वहां की दो स्थानीय लड़की, सेला और नूरा ने उनकी सहायता की थी। उनके नाम पर ही सेलापास और हाइवे का नाम नूरा रखा गया। रास्ते में जाते समय बीच-बीच में सेना के ठिकाने मिलते रहते हैं। अंतत: तवांग आता है जो चीन सीमा के पास है। अरूणाचल प्रदेश में अवस्थित तवांग समुद्र तल से 3500 मीटर की ऊँचाई पर स्थित प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत स्थल है। यह 2085 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल तक फैला हुआ है तथा उत्तर में तिब्बत, दक्षिण पश्चिम में भूटान, पूर्व में कामेंग तथा पश्चिम में सेला अवस्थित हैं।

तवांग में कई देखने लायक स्थान हैं। तवांग में अवस्थित 400 वर्ष पुराना गेलदेन नामगेल लाटसे (Galden Namgyal Lhatse) मोनेस्टरी, जिसे गोल्डन पागोदा के नाम से भी जाना जाता है, आठ हजार फीट से भी अधिक की ऊंचाई पर बने एशिया की सबसे पुरानी व विशाल मोनेस्टरी है। तवांग मोनेस्टरी का निर्माण काल सत्रहवीं सदी माना जाता है, जिसके चारों ओर छह सौ दस मीटर लंबी दीवार है। वहां के विशाल पुस्तकालय में पुराने धर्मग्रंथों के करीब साढ़े आठ सौ बंडल सुरक्षित हैं। बौद्ध धर्म के अध्ययन के लिए यह महत्त्वपूर्ण है। यह स्थल महायान बौद्धों का केन्द्र है। यहां पर स्थित 18 फीट की ऊँचाई की बुद्ध की मूर्ति देखने लायक है। तवांग से दो किलोमीटर की दूरी पर संघष लेक है जिसे फिल्म कोयला की सूटिंग होने के बाद से माधुरी झील के नाम से जाना जाता है। यह एक ऐसी सुंदर जगह है जहां की रहस्यमय खूबसूरती स्वर्ग से कम नहीं है। यह झील ऊँची पहाड़ियों के बीच है जिसके बीच में लंबे-लंबे बिना टहनियों और पत्तों के वृक्ष हैं जिसे देखने से ऐसा लगता है कि किसी ने इन वृक्षों को ऊपर से छाँट दिया हो। वहाँ पर स्थित वार-मेमोरियल नवम्बर,1992 में शुरू किया गया था। यह मेमोरियल सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध में शहीद हुए भारतीय सैनिकों की याद में बनाया गया है। उन सभी वीर सैनिकों के नाम जिन्होंने भारत-चीन युद्ध में अपने प्राणों की आहूति दी थी, इस वार मेमोरियल पर सुनहरे अक्षरों में दर्ज किया गया हैं।

अरूणालच जाने के लिए भारतीय नागरिकों को भी इनरलाइन परमिट लेना पड़ता है। अरूणाचल हाउस से यह सहज ही मिल जाता है। कोई भी पर्यटक दिल्ली, कोलकाता और गुवाहाटी स्थित अरूणाचल भवनों से यह प्राप्त कर सकता है।

तवांग कैसे जाएं

तवांग रेल,रोड एवं हवाई मार्ग के द्वारा पहुँचा जा सकता है ।

रेल मार्ग - तवांग जाने के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन रंगापारा है । जहां तक विभिन्न जगहों से पहुँचा जा सकता है । रंगापारा से सड़क मार्ग से तवांग जाना पड़ता है ।

रोड मार्ग - तवांग तक रोड से जाने के लिए गुवाहाटी और तेजपुर से भाड़े के वाहन उपलब्ध है। बोमडिला से तवांग के लिए बसे भी चलती है। अन्य टाउन से भी बस सुविधा उपलब्ध है।

हवाई मार्ग - तवांग का निकटतम हवाई अडड़ा तेजपुर के सलोनीबाड़ी है और गुवाहाटी से तेजपुर के लिए भी हवाई सुविधा उपलब्ध है।

तवांग कब जाएं

यहाँ सैर करने का अनुकूल समय मार्च से मई तक और अगस्त से नवंबर तक है। सर्दियों में भारी ऊनी और गर्मियों में हल्के ऊनी कपड़े अवश्य ले जाएं।

अंत में यह कहा जा सकता है कि पर्वतीय सैरगाह सैलानियों को सब से अधिक आकर्षित करती हैं। बर्फीले पहाड़, झरझर बहते झरने, कलकल करती उन्मुक्त नदियां, हरे-भरे घने वन और शहरी कोलाहल से दूर प्रकृति का सानिध्य, हर सैलानी को भाता है । यही कारण है कि सब से अधिक पर्यटक इस स्थल को देखने आते हैं। देखा जाए तो छुट्टियाँ मनाने के लिए यह एक रमणीक स्थल है। आज के बदलते जीवनशैली में आ रहे बदलावों के बावजूद अरूणाचल के जनजातीय समाज आज भी अपनी परंपराओं के साथ आधुनिकता की दिशा में आगे बढ़ रहा है। बुनियादी सुविधाओं का विकास पिछले कुछ वर्षों से काफी हुआ है, फिर भी प्रदेश के अधिकांश गांव अब भी सड़क संपर्क से कटे हैं। जिला मुख्यालय कै लिए सड़कें बन गई हैं। अब राज्य सरकार पर्यटन के माध्यम से राजस्व अर्जित करने का प्रयास कर रही है। यही वजह है कि अब राज्य सरकार जगह-जगह टूरिस्ट लाजों का निर्माण करवा रही है। यातायात की व्यवस्था को बेहतर बनाया जा रहा है। इन प्रयासों से अरूणाचल में देशी-विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ी है। इसके साथ ही तवांग जैसे पर्यटन स्थल का महत्त्व भी बढ़ा है और यहां के स्थानीय लोगों में शेष भारत के लोगों को जानने-पहचानने का अवसर भी मिल रहा है। इससे राष्ट्र एकता को भी बढ़ावा मिल रहा है तथा पूर्वोत्तर के तवांग जैसे क्षेत्रों का विकास भी हो रहा है।

गायत्री मिलि
राजभाषा सहायक-I/निर्माण

बधाई

अधिकारियों को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

01 फरवरी श्री अम्बिका कछारी, उप मुख्य इंजीनियर/नि/सर्वे

24 फरवरी श्री रवि आमराही, उप मुख्य इंजीनियर/नि/इंफाल-2

02 मार्च श्री जे. के. चौधरी, उप मुख्य इंजीनियर/नि/मालीगांव

06 मार्च श्री ए.के. दास, उप मुख्य इंजीनियर/नि/सिलचर/4

08 मार्च श्री पी.जे. शर्मा, उप मुख्य इंजीनियर/नि/एनएलपी/1

11 मार्च श्री बी.के. तिरकी, मुख्य इंजीनियर/नि/5

01 अप्रैल श्री विश्वजीत राय, उप मु.सि. एवं दूर सं.इंजी./ नि

10 अप्रैल श्री आनंद प्रकाश, वि.स.एवं मुलेधि/नि/1

13 अप्रैल श्री मोहन लाल, मुख्य इंजीनियर/नि/7

15 अप्रैल श्री के.टी. बैचो, वि.स. एवं मुलेधि/नि-2

17 अप्रैल श्री मोहिंदर सिंह, उप मुख्य इंजीनियर/नि/डिब्रूगढ़-1

22 अप्रैल श्री सौरभ गुप्ता, उप मुख्य इंजीनियर/नि/सिलचर-1

20 अप्रैल श्री पी.के. दास, उप मुख्य इंजीनियर/नि/लामडिंग-1

रंगिया–मुर्कोंगसेलेक आमान परिवर्तन परियोजना के अंतर्गत नव निर्मित पुल